IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 5, April 2024

वर्तमान संदर्भ में गुटनिपरेक्षता की प्रासंगिकता

डॉ. अर्चना श्रीवास्तव[1] व कामना देवी साहू[2]

सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान, शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, भोपाल, म.प्र.[1]

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल, म.प्र.[2]

प्रस्तावना :

गुट–निरपेक्ष आंदोलन आज विश्व में प्राभावोत्पाद विचारधारा का प्रतिपादन करता है। गुट–निरपेक्ष आन्दोलन की उत्पत्ति एक विचारपूर्ण अवधारणा के परिणामस्वरूप हुई थी जिसका उद्देश्य नवोदित राष्ट्रों की स्वाधीनता की रक्षा करना था तथा युद्ध की संभावनाओं को कम करना था।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विश्व दो गुटों में विभाजित हो गया था– सोवियंत संघ एवं संयुक्त राज्य अमेरिका उस समय एशिया एवं अफ्रीका के नये राष्ट्रों के सम्मुख अपनी स्वतंत्रता को बनाए रखने की समस्या थी जिसके परिणामस्वरूप गुट निरपेक्षता का प्रादुर्भाव हुआ। एशिया एवं अफ्रीका के नए राष्ट्रों ने अपनी स्वतंत्र विदेश नीति का संचालन करते हुए दोनों गुटों की राजनीति से अलग कर दोनों गुटों से समान रूप से आर्थिक एवं सैनिक सहायता प्राप्त करने के लिए गुट–निरपेक्ष नीति को अपनी विदेश नीति का आधार बनाया। इसके बाद एशिया अफ्रीका एवं लातीनी अमेरिका के अनेक देशों ने गुट–निरपेक्ष नीति ने अपने विचार प्रकट किये। वर्तमान काल में 120 देश गुट–निरपेक्ष आन्दोलन के सदस्य हैं।

अमरीकी गुट एशिया के नये राष्ट्रों पर अनेकों प्रकार से दबाव डाल रहा था ताकि वे उसके गुट में शामिल हो जाए लेकिन एशिया के अधिकांश राष्ट्रों पर पश्चिम देशों की भाँति गुटबन्दी में विश्वास नहीं करते थे। वे सोवियत साम्यवाद और अमरीकी पूंजीवाद दोनों को अस्वीकार करते थे। वे अपने आपको किसी वाद के साथ सम्बन्ध नहीं करना चाहते थे और उनका विश्वास था कि उनके उद्देश्य प्रदेश 'तीसरी शक्ति' हो सकते हैं जो गुटों के विभाजन को अधिक जटिल संतुलन में विभक्त करके अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग में सहायक हो सकते हैं। गुटों से अलग रहने की नीति अर्थात् गुटनिरपेक्षवाद एशिया के नवजागरण की प्रमुख विशेषता थी। सन् 1947 स्वतंत्रता के उपरांत भारत ने इस नीति का पालन करना शुरू किया। उसके बाद एशिया के अनेक देशों ने इस नीति में अपने विचार व्यक्त किये। जैसे–जैसे अफ्रीकी देश स्वतंत्र होते हैं वैसे–वैसे उन्होंने भी इस नीति का आलम्बन करना शुरू किया। भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू, मिस्त्र के राष्ट्रपति नासिर तथा मुगोस्लाविया के मार्शल टीटो ने 'तीसरी शक्ति' की इस धारणा को मजबूत बनाया।

वस्तुतः शीत युद्ध के राजनीतिक ध्रुवीकरण ने गुटनिरपेक्ष की समझ तैयार करने में एक उत्प्रेरक कार्य किया। लम्बे औपनिवेशिक अधिपत्य से स्वतंत्र होने के लम्बे संघर्ष के बाद किसी दूसरे अधिपत्य को स्वीकार कर लेना नये राष्ट्रों के लिए एक ऐसी भूमिका की तलाश में थे जो उनके आत्मसम्मान और क्षमता के अनुरूप हो। क्षमता स्तर पर किसी एक राष्ट्र के लिए ऐसी स्वतंत्र भूमिका अर्जित कर पाना एक कठिन प्रयास होता। जिसकी संभावनाएं भी अत्यधिक संदिग्ध बनती। अतः आत्मसम्मान की एक अन्तर्राष्ट्रीय भूमिका के लिए सामूहिक पहल न सिर्फ वांछित थी, अपितु आवश्यक थी। स्वतंत्रता और सामूहिकता की इस मानसिकता ने गुट निरपेक्षता की वैचारिक और राजनीतिक नींव रखी। इस प्रक्रिया को तात्कालिक राजनीतिक वातावरण ने गति प्रदान की।

गुटनिरपेक्षता –

राजनीति में गुट–निरपेक्ष नीति महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर चुकी है। यह नीति पिछले चार दशक से अधिक चल रही है और आज संयुक्त राष्ट्र संघ के दो–तिहाई देश इसे व्यवहार में ला रहे हैं। फिर भी यह नहीं मान सकते हैं कि जिन लोगों को अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में दिलचस्पी है वे सब गुटनिरपेक्षता का सही–सही अर्थ समझते हैं। इसके कई कारण हैं एक कारण यह है

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 5, April 2024

कि गुटनिरपेक्ष देशों में अब भी गुटनिरपेक्षता से सम्बन्धित शब्दावली के बारे में भरपूर भ्रांतियां फैली हुई हैं कि द्वितीय गुटनिरपेक्ष देशों की संख्या में तेजी से वृद्धि के कारण गुटनिरपेक्षता के सही–सही अर्थ और अभिमत के प्रश्न पर गहरा मतभेद हो गया है। हालाँकि ये मतभेद इस तरह के हैं कि उसके किस पक्ष को कितनी प्रमुखता दी जाए। तृतीय, जहाँ गुटनिरपेक्षता का एक सर्वमान्य मंच है वहाँ प्रत्येक गुटनिरपेक्ष देश का अपना वैयक्तिक अथवा क्षेत्रीय मंच भी भिन्न–भिन्न स्तरों पर कार्य कर रहा हो– विश्व स्तर पर तथा वैयक्तिक अथवा क्षेत्रीय स्तर पर।

'गुटनिरपेक्षता' शब्द जिस नीति अथवा दृष्टिकोण का द्योतक बन गया है उसका बोध कराने के लिए यही एक शब्द नहीं है और न यह सबसे संतोषजनक शब्द ही है। यह शब्द शायद जवाहर लाल नेहरू ने बनाए थे और वे भी इससे बहुत प्रसन्न नहीं थे क्योंकि इस शब्द में प्रकटता एक नकारात्मक ध्वनि है। गुटनिरपेक्षता को 'अप्रतिबद्धता', 'असम्पृक्तता', 'तटस्थता', 'तटस्थतावाद', 'सकारात्मक तटस्थतावाद', 'गतिशील, 'तटस्थता', 'स्वतंत्र और सक्रिय नीति' और 'शान्तिपूर्ण सक्रिय सह अस्तित्व' भी कहा जाता है।

डॉ0 एम.एस. राजन के अनुसार, ''इनमें से कुछ शब्द और शब्द बन्ध तो केवल 'अर्थजाल' के द्योतक हैं और यह जाल गुटनिरपेक्षता के ऐसे आलोचकों ने बुना है जिन्हें या तो इससे सहानुभूति नहीं रही या जिन्हें इसके बारे में पूरी जानकारी नहीं रही। भले ही कभी भी गुटनिरपेक्ष देशों प्रवक्ता और उनके समर्थक भी उन शब्दों का प्रयोग कर लेते हैं।''

शीत युद्ध से अलग ही गुट निरपेक्षता का सार तत्व है। यह नीति चुप होकर बैठ जाने की या अन्तर्राष्ट्रीय मामलों से संन्यास लेने की नहीं है, बल्कि इसके अंतर्गत स्वतंत्र राष्ट्रों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाए जाते हैं और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में न्यायपूर्ण ढ़ंग से सक्रिय भाग लिया जा सकता है। सन् 1961 में गुट निरपेक्षता के तीन कर्णधार– नेहरू, नासिर, टीटो ने इसके पाँच आधार स्वीकार किए थे– (1) सदस्य देश स्वतंत्र नीति पर चलता न हो; (2) सदस्य देश उपनिवेशवाद का विरोध करता हो; (3) सदस्य देश किसी सैनिक गुट का सदस्य न हो; (4) सदस्य देश ने किसी बड़ी शक्ति के साथ द्वितीय समझौता न किया है; या (5) सदस्य देश ने किसी बड़ी ताकत को अपने क्षेत्र में सैनिक अड्डा बनाने की इजाजत न दी हो। अतः वे ही देश गुटनिरपेक्ष माने जा सकते हैं जो स्वतंत्र विदेश नीति का पालन करते हो, राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन का समर्थन करते हों। शक्ति या सैनिक गुटों के सदस्य न हों। दूसरे शब्दों में एक–दूसरे के विरोधी शक्ति शिविरों से दूर (अलग) रहने वाले ..... को टालने वाले तनाव को कम करने वाले और शान्ति समर्थक देश ही गुट निरपेक्षता का दर्जा प्राप्त कर सकते हैं।

अतः गुटनिरपेक्षता का अभिप्राय है अपनी स्वतंत्र रीति नीति गुटों से अलग रहने से हर प्रश्न के औचित्य–अनौचित्य को देखा जा सकता है। किसी एक गुट के साथ सम्बद्ध होकर उचित अनुचित का विचार किये बिना ही अन्धानुकरण या समर्थन करना गुटनिरपेक्षता नहीं है।

सारणी क्र. 01

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के शिखर सम्मेलन

क्रम संख्या	स्थान	वर्ष	सदस्य देशों की संख्या
1.	बेलग्रेड (यूगोस्लाविया)	1961	25
2.	कहिरा (मिस्त्र)	1964	47
3.	लुसाका (जाम्बिया)	1970	54
4.	अल्जीयर्स (अल्जीरिया)	1973	75
5.	कोलंबो (श्रीलंका)	1976	88
6.	हवाना (क्यूबा)	1979	94

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 5, April 2024

7.	नई दिल्ली (भारत)	1983	101
8.	हरारे (जिम्बाब्वे)	1986	101
9.	बेलग्रेड (यूगोस्लाविया)	1989	102
10.	जकार्ता (इंडोनेशिया)	1992	108
11.	कार्टागेना (कोलंबिया)	1995	108
12.	डरबन (दक्षिण अफ्रीका)	1998	113
13.	कुआलालाम्पुर (मलेशिया)	2003	116
14.	हवाना (क्यूबा)	2006	118
15.	शर्म अलशेख (मिस्त्र)	2009	118
16.	तेहरान (ईरान)	2012	120

गुटनिरपेक्षता गतिशीलता और न्यूटन प्रवृत्तियाँः–

गुटनिरपेक्षता की नीति समय के साथ अधिकाधिक सक्रिय, गतिशील और व्यावहारिक बनती जा रही है। प्रारंभ में इस नीति में नैतिकता और आदर्शवाद का पुट अधिक था, लेकिन गुटनिरपेक्ष देश यह अच्छी तरह समझने लगे हैं कि कोई भी नीति तभी सार्थक हो सकती है जब उसे यथार्थवाद के धरातल पर उतारा जाय। इस दृष्टि से गुटनिरपेक्षता की नूतन गतिशीलता प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं–

(1) आज की गुटनिरपेक्ष अपने पुराने स्वरूप से इसलिए भिन्न और गतिशील है अब गुट निरपेक्षता के अंतर्गत यह बात संभव मानी जाने लगी है कि यदि किसी गुटनिरपेक्ष राष्ट्र के सोवियत संघ; चीन अथवा अमरीका के साथ विशेष सम्बन्ध हो और यदि फिर भी वह राष्ट्र स्वतंत्र विदेश नीति का अनुसरण करता है तो उसे गुटनिरपेक्ष माना जा सकता है। भारत– सोवियत संधि (1971) को इसी परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए, इससे भारत की गुटनिरपेक्षता पर कोई आंच नहीं आती।

(2) ऐसी स्थिति उत्पन्न होती जा रही है कि सैनिक गुटों से अलग रहना गुटनिरपेक्षता का अनिवार्य तत्व नहीं है। लैटिन अमरीका के अनेक देशों रीओं संधि के सदस्य होने के बावजूद भी गुटनिरपेक्ष कहलाते हैं। पाकिस्तान और पुर्तगाल जैसे देश में जो सैनिक संधि से जुड़े हुए हैं, गुटनिरपेक्ष आन्दोलन में शामिल हो गए हैं। गुटनिरपेक्षता के विकास से अब ऐसी अवस्था आ गयी है कि विदेश नीति स्वतंत्रता ही अब गुटनिरपेक्षता का एकमात्र मापदण्ड रह गया है।

(3) पिछले कुछ वर्षों से गुटनिरपेक्ष देशों के कई औपचारिक संगठन अस्तित्व में आते दिखाई दे रहे हैं। यह महसूस किया जा रहा है कि बिना किसी औपचारिक संस्थात्मक संगठन के गुटनिरपेक्ष देश विश्व राजनीति से संगठित होकर कोई कार्य नहीं कर सकतें। लुसाका और कोलम्बों शिखर सम्मेलन में यह मांग की गयी थी कि गुटनिरपेक्ष देशों का स्थायी सचिवालय हो, किंतु आज तक किसी प्रकार का स्थायी सचिवालय तो अस्तित्व में नहीं आया, किंतु कतिपय औपचारिक संगठन नजर आ रहे हैं ये संगठन दो प्रकार के हैं– 1. समन्वय ब्यूरो और 2. सम्मेलन। सम्मेलन भी दो प्रकार के हैं– 1. गुटनिरपेक्ष देशों के विदेश मंत्रियों का सम्मेलन और 2. शिखर सम्मेलन।

(4) आजकल गुटनिरपेक्ष आन्दोलन नव–उपनिवेशवादी प्रवृत्तियों का पर्दाफाश करने में लगा है।

(5) गुटनिरपेक्ष आन्दोलन एक राजनीतिक आन्दोलन से आर्थिक आन्दोलन का रूपधारण करता जा रहा है गुटनिरपेक्ष राष्ट्र नई अन्तर्राष्ट्रीय 'आर्थिक व्यवस्था' की मांग कर रहे हैं। गुटनिरपेक्षता की नीति में पारस्परिक आर्थिक सहयोग के तत्व पर विशेष बल

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 5, April 2024

दिया जाने लगा है। टी.एन. कौल के शब्दों में, ''अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में राजनीतिक पहलू की अपेक्षा आर्थिक पहलू पर उत्तरोत्तर अधिक बल दिये जाने से गुटनिरपेक्षता की धारणा की सार्थकता सिद्ध हुई है।''

गुटनिरपेक्षता का भविष्य : प्रासंगिकताः–

गुटनिरपेक्षता विश्व राजनीति में राष्ट्रों के लिए नए विकल्प के रूप में निश्चय ही स्थायी रूपधारण कर चुकी है। इसने विशेषतः राष्ट्र समाज के छोटे–छोटे और अपेक्षाकृत कमजोर सदस्यों के संदर्भ में राष्ट्रों की स्वतंत्रता और समता बनाए रखने में योग दिया है। इसने विश्व के पूर्ण ध्रुवीकरण को रोककर विचारधारागत शिविरों के विस्तार को और प्रभाव को संयत करके तथा गुटों के अंदर भी स्वतंत्रता की शक्तियों को प्रोत्साहन देकर अन्तर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने तथा उसे बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योग दिया है। इसने संयुक्त राष्ट्र संगठन के भीतर और बाहर दोनों जगह बहुत से कल्याणकारी क्षेत्रों में, जैसे कि उपनिवेशों को स्वतंत्र कराने, प्रजातीय समता को साकार करने तथा अल्प–विकसित देशों के आर्थिक विकास के क्षेत्र में बहुत बड़ा योग दिया है।

आज संयुक्त राष्ट्र संघ के दो तिहाई देश गुटनिरपेक्षता के दायरे में आ चुके हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ के विभिन्न मंचों से गुटनिपरेक्ष राष्ट्रों ने विश्व–शांति, उपनिवेशवाद के अंत, परमाणु अस्त्रों पर रोक, निःशस्त्रीकरण, हिन्द महासागर को शान्ति क्षेत्र घोषित करना नयी अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था के निर्माण आदि विषयों पर संगठित रूप से कार्यवाही की है और सफलता हासिल की है। यह भी सवाल किया जाता है कि आज गुटनिरपेक्षता का क्या औचित्य रह गया है। गुटनिरपेक्षता की सार्थकता द्वितीय विश्व युद्ध के बाद शीत युद्ध के वातावरण में तो थी, किंतु पिछले 15–20 वर्षों में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में बहुत सारे परिवर्तन हुए। शीतयुद्ध का अंत हो चुका है, सोवियत संघ का विघटन हो गया, पूर्वी यूरोप के देशों में साम्यवाद को कब्र में दफनाया जा चुका है, वारसा पैक्ट भंग कर दिया गया है, नाटो की भूमिका में परिवर्तन आ रहा है। जर्मनी का एकीकरण हो चुका है, गुटनिरपक्षेता का उदय शीत युद्ध के संदर्भ में हुआ था और आज शीत युद्ध के अंत हो जाने के कारण गुटनिरपेक्ष आन्दोलन अप्रासंगिक हो गया है। निर्गुट आन्दोललन के 8वें सम्मेलन में जिम्बाब्वे की राजधानी हरारे में लीबिया के नेता कर्नल गद्दाफी ने निर्गुट आन्दोलन को 'अन्तर्राष्ट्रीय भ्रम' का मजाकिया आन्दोलन कहा था और पूछा था कि जब अमरीका ने उनके देश पर हवाई हमला करके उन्हें सपरिवार जान से मार देने की कोशिश की तो निर्गुट आन्दोलन क्या कर रहा था? क्या इसके बाद भी इसकी प्रासंगिकता रह जाती है।

फरवरी 1992 में गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों के विदेश मंत्रियों की बैठक में मिस्त्र ने स्पष्ट तौर से अपील की थी कि इस आन्दोलन को समाप्त कर दिया जाना चाहिए उनका तर्क था कि सोवियत संघ के विघटन, सोवियत गुट तथा शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद, गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की प्रासंगिकता समाप्त हो गई है कि बहुसंख्यक विदेश मंत्रियों ने इस विचार का विरोध किया था। उनका कहना था कि बड़ी संख्या में गुटनिरपेक्ष देश अभी निर्धन है या आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए हैं और समृद्ध राष्ट्रों तथा बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा उनका नव–औपनिवेशिक शोषण किय जा रहा है, इस स्थिति में उन्हें बचाने के लिए यह जरूरी है कि विकसित और विकासशील देशों के बीच आपसी सहयोग सुदृढ़ एवं सक्रिय किया जाए। इसके लिए निर्गुट आन्दोलन एक अपरिहार्य मंच का काम करेगा।

आज 'संयुक्त राष्ट्र संघ' को केन्द्र बनाकर 'नाम' की महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। निःशास्त्रीकरण के क्षेत्र में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन विश्व की पुकार की भूमिका निर्वाह सकता है और इसे यह भी सुनिश्चित करना होगा कि महाशक्तियाँ तीसरी दुनिया के देशों में घातक हथियारों का जमावड़ा न करे। 1993 में आन्दोलन का सदस्य बनने के लिए प्राप्त नये आवेदनों से यह सुस्पष्ट है कि सार्वभौम कार्यों में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की निरन्तर प्रासंगिकता बनी है और महत्व भी बढ़ा है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 5, April 2024

ऐसा कहा गया है कि 21वीं शताब्दी आर्थिक युद्ध की होगी, आर्थिक दृष्टि से समृद्ध राष्ट्रों के गुट उभरकर स्वयं ही प्रतिस्पर्द्धा कर लेंगे और इससे विकासशील राष्ट्रों की स्वतंत्रता और हितों को खतरा पहुँचेगा। इस खतरे को नियंत्रित करने लिए उत्तर–दक्षिण सम्वाद को बनाए रखने में दक्षिण–दक्षिण सहयोग और नई अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को बनाए रखने के लिए गुटनिरपेक्ष आन्दोलन जी–77 को एक होकर कार्य करना होगा। आज निम्नलिखित क्षेत्रों में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की प्रासंगिकता नजर आती है–

1. नई अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था की पुरजोर मांग करना,
2. आणविक निरस्त्रीकरण के लिए दबाव डालना,
3. दक्षिण–दक्षिण सहयोग को प्रोत्साहन देना;
4. एक ध्रुवीय विश्व व्यवस्था में अमरीकी दादागिरी का विरोध करना;
5. विकसित और विकासशील (उत्तर–दक्षिण संवाद) देशों के बीच सार्थक वार्ता के लिए दबाव डालना;
6. अच्छी वित्तीय स्थिति वाले गुटनिरपेक्ष देशों (जैसे ओपेक राष्ट्रों) को इस बात के लिए तैयार करना कि वे अपना अधिशेष पश्चिमी देशों की बैंकों में जमा करने के बजाय विकासशील देशों में विकासात्मक उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल करे;
7. नव–औपनिवेशिक शोषण का विरोध किया जाय;
8. संयुक्त राष्ट्र संघ के पुनर्गठन के लिए दबाव डाला जाए ताकि बड़े राष्ट्र प्रस्तावित पुनर्गठन के लिए राजी हो सके यानी उनके 'वीटो' परिषद् की सदस्य में पर्याप्त बढ़ोत्तरी की जा सके या महासभा को और अधिकार दिये जा सकें।

निष्कर्षः–

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का एक स्थायी तत्व है और राष्ट्रों के अस्तित्व की भाँति इसका अस्तित्व और प्रासंगिकता निरंतर बनी रहेगी। इसका मूल कारण यह है कि गुटनिरपेक्षता का सम्बन्ध विकासशील राष्ट्रों की स्वतंत्रता उसको अक्षुण्ण बनाये रखने की आवश्यकता और विकास से है न कि शीत युद्ध या उसकी समाप्ति अथवा गुटबद्धता से। संक्षेप में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का सम्बन्ध मुख्यतः पाँच 'D' से रहा है : विउपनिवेशीकरण, विकास, तनाव–शैथिल्य, निरस्त्रीकरण और लोकतंत्रीकरण। अशान्त एवं अस्त्र–शस्त्रों से सुसज्जित विश्व में यह एक सुरक्षा नली है।

संदर्भ स्रोतः–

[1]. डॉ. वी.एल. फड़िया, भारत एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, साहित्य भवन पबिल्केशन्स आगरा

[2]. एस.पी. गोविल, डी.के. वाजपेयी, भारत एवं आधुनिक विश्व, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी

[3]. डॉ. वी.एल. फड़िया, भारत एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, साहित्य भवन पबिल्केशन्स आगरा